CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋषिरुवाच ।

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यव-
स्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च

और आराधना करने की विधि मुझ विनीत से विधिपूर्वक कहिये ॥२॥ ऋषि ने कहा, यह रहस्य परम गुप्त है, इससे किसी से कहने योग्य नहीं है, परन्तु हे नराधिप ! तुम भक्त हो इसलिये ऐसा कोई विषय नहीं है, जों तुमसे न कहूँ ॥३॥ जों सबकी आदिरूपा सत्त्व, रज,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिभ्रती। नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥ ५ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा। शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी। बभार रूपमपरं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥

तम, तीनों गुणवाली परमेश्वरी महालक्ष्मी है वह लक्ष्य और अलक्ष्य स्वरूपा है, तथा सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त होकर स्थित है ॥४॥ हे राजन् ! वह हाथों में मातुलिंग अर्थात् विजौराफल, गदा, खेट और पानपात्र तथा शिर पर नाग, लिङ्ग और योनि धारण करती है ॥५॥ वह तपाये हुए सुवर्ण के समान कान्ति वाली देवी, तपाये हुए सोने के सुन्दर आभूषण धारण किये अपने तेज से सम्पूर्ण आकाश को परिपूर्ण करती है ॥६॥ उस परमेश्वरी ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राञ्चितवरा-
नना। विशाललोचना नारी बभूव तनु-
मध्यमा ॥८॥ खंगपात्रशिरः खेटैरलंकृत-
चतुर्भुजा। कबंधहारं शिरसा बिभ्राणा-
ऽहिशिरः स्रजम् ॥९॥ सा प्रोवाच
महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।

और वह भिन्न अंजन के समान कान्तिवाली दंष्ट्रा से शोभायमान सुन्दर मुख वाली विशाल नेत्रों से शोभित तथा सूक्ष्म कटि वाली स्त्री रूप हो गई और खंग पान-पात्र शिर तथा खेट इनसे शोभित चार भुजा वाली और कबंध के हार को तथा सर्पों के शिर को माला को शिर में धारण किये हुये उस तामसी उत्तम नारी ने महालक्ष्मी से कहा कि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ।

मैं तुमको नमस्कार करती हूँ ॥ ९-१० ॥ महालक्ष्मी ने उस तामसी स्त्री से कहा—मैं तुम्हारे नाम और कर्म बताती हूँ ॥११॥ महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा, तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि और दुरत्यया, ये तुम्हारे नाम कर्म के अनुसार हैं । इन नामों से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥१३॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप । तत्त्वाख्येनाऽतिशुद्धेन गुणेन्दुप्रभं दधौ ॥१४॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा

और नामों को जो तेरे कर्मों को जानकर पढ़ता है सो सुख पाता है ॥ १३ ॥ हे राजन् ! महालक्ष्मी ने उनसे ऐसा कहकर अति शुद्ध सतोगुण करके चन्द्र के समान कान्तिवाला दूसरा स्वरूप धारण कर लिया ॥ १४ ॥ और अक्षमाला, अंकुश, वीणा और पुस्तक इनको धारण किये वह उत्तम नारी हो गई और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ददौ ॥१५॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक्स-
रस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्बीजगर्भा च
धीश्वरी ॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं
सरस्वतीम् । युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानु-
रूपतः ॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज
मिथुनं स्वयम् । हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ

सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, बीजगर्भा और धीश्वरी ॥१५-१६॥ उसके बाद महालक्ष्मी ने महाकाली और महासरस्वती से कहा—तुम दोनों देवी अपने स्वरूप के अनुसार स्त्री-पुरुष का जोड़ा उत्पन्न करो ॥१७॥ महालक्ष्मी ने उन दोनों से यह कहकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमलासनौ ॥१८॥ ब्रह्मन्विधे विरञ्चे-
ति धातरित्याह तं नरम् । श्री पद्मे
कमले लक्ष्मीत्याह माता स्त्रियं च ताम्
॥१९॥ महाकाली भारती च मिथुने
सृजतः सह । एतयोरपि रूपाणि नामानि

आप ही हिरण्य गर्भ वाले सुन्दर और कमलासन पर बैठे स्त्री-पुरुषों का एक जोड़ा उत्पन्न किया ॥१८॥ फिर उस नर के, हे ब्रह्मन् ! हे विधि ! हे विरंचि ! हे धात ! ये नाम धरे और उस स्त्री के श्रीः, पद्मा, कमला और लक्ष्मी ये नाम कहे ॥१९॥ और महाकाली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

च वदामि ते ॥२०॥ नीलकण्ठं रक्तबाहु श्वेतांग चन्द्रशेखरम् । जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥२१॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ।

और महासरस्वती ने भी अपने जोड़े रचे, उनके भी स्वरूप और नाम तुझसे कहता हूं कि ॥२०॥ महाकाली ने नीलकण्ठ वाले रक्तबाहु वाले श्वेत शरीर वाले और चन्द्रमा को ललाट पर धारण किये पुरुष को और गोरी स्त्री को उत्पन्न किया ॥२१॥ और उस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषा-
क्षरा स्वरा ॥२२॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं
कृष्णं च पुरुषं नृप । जनयामास
नामानि तयोरपि वदामि ते ॥२३॥

पुरुष रूप के रुद्र, शंकर, स्थाणु, कपर्दी और त्रिलोचन ये नाम कहे और उस स्त्री के त्रयी, विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरा और स्वरा ये नाम धरे ॥ २२ ॥ और हे राजन् ! सरस्वती ने गौरी स्त्री को और कृष्ण पुरुष को उत्पन्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥
॥ २४ ॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरेऽताद्विदो जनाः ॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृपत्रयीम् ।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२६॥

किया॥ उन दोनों के भी नाम कहता हूँ ॥२३॥ पुरुष के विष्णु, कृष्ण, हृषीकेश, वासुदेव और जनार्दन, तथा स्त्री के उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुन्दरी, सुभगा और शिवा नाम रक्खा ॥२४॥ इस प्रकार तीनों स्त्रियाँ शीघ्र ही पुरुषत्व को प्राप्त हो गईं । उनको दिव्य दृष्टि वाले ही पुरुष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत् ।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद्गौर्या सह वीर्यवान् ॥
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप ।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२८॥
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ।

देखते हैं, दूसरे लोग नहीं देखते ॥२५॥ हे नृप! महालक्ष्मी ने वेदत्रयी पत्नी ब्रह्मा को, वर देनेवाली गौरी शिव को और लक्ष्मी विष्णु को दिया ॥२६॥ ब्रह्मा ने स्वरा के साथ मिलकर एक अण्ड उत्पन्न किया और वीर्यवान् रुद्र भगवान् ने गौरी के साथ मिलकर उसे फोड़ा ॥२७॥ हे राजन्! उस अण्ड से महत्तत्त्व आदि स्थावर-जङ्गमरूप महाभूतात्मक सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न किया ॥२८॥ भगवान् विष्णु ने लक्ष्मी के साथ उसका पालन किया और महादेव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२६॥
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधाभृत् ।३०।
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥

इति प्राधानिकं रहस्यं समाप्तम् ।

ने गौरी के साथ सम्पूर्ण जगत् का संहार किया ॥२६॥ हे महाराज ! महालक्ष्मी सर्वसत्त्वमयी ईश्वरी है । वह निराकार है और साकार भी । उसके अनेक नाम हैं ॥३०॥ वह अपने नामों के सिवाय अन्य किसी प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं जानी जा सकती ॥३१॥

इति भगवत्याः प्राधानिकं रहस्यम भाषाटीका समाप्तम ।

—०❋०—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ वैकृतिकरहस्यम्

ऋषिरुवाच-त्रिगुणातामसी देवी सात्त्विकी या त्वयोदिता। स सर्वा चंडिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ।।१।। योगनिद्राहरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा। मधुकैटभ-नाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासन: ॥ २ ॥

ऋषि बोले—कि, तुमने जो त्रिगुणा तामसी और सात्त्विकी देवी कही वही शर्वा, चंडिका, दुर्गा, भद्रा, और भगवती कहलाती है और तमोगुण वाली महाकाली विष्णु भगवान् की योगनिन्द्रा कहलाती है, जिसकी स्तुति मधुकैटभ के नाश के लिये ब्रह्मा नेकी थी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥३॥
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप ।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥
खड्गबाणगदाशूलशंखचक्रभुशुण्डिभृत् ।

नाश के लिए ब्रह्मा ने की थी ॥२॥ वह काजल के समान काली है । उसके दस मुँह, दस भुजाएँ, दस पैर और तीस विशाल नेत्र हैं ॥३॥ हे राजन् ! वह सुन्दर दाढ़ों और दाँतों वाली महाकाली भयङ्कर रूपिणी होने पर भी भक्तों को रूप, सौभाग्य और कान्ति आदि महाश्री देनेवाली है ॥४॥ वह खड्ग, बाण, गदा, शूल, शङ्ख, चक्र, भुशुण्डी, परिघ, धनुष,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥५॥
एषा सा वैष्णावी माया महाकाली दुरत्यया ।
आराधिता वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ।

और रुधिर टपकता हुआ सिर धारण करती है ॥५॥ वह दुरत्यया महाकाली विष्णु की माया है, जिसकी आराधना करने से चराचर जगत् वश में हो जाता है ॥६॥ जो सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई है वह अतुल कान्ति वाली महिषमर्दिनी त्रिगुणा साक्षात् महालक्ष्मी है ॥७॥ उसका मुख श्वेत, भुजाएँ नीली, स्तनमण्डल श्वेत, कटि और चरण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्तमध्या रक्तपादा नीलजंघोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ।
चित्रानुलेपना कांतिरूपसौभाग्यशालिनी ॥९॥
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्॥१०

लाल, जाँघें नीली हैं। वह उत्कट मदवाली है ॥ ८ ॥ उसका जघन विचित्र है और वह चित्र-विचित्र माला, वस्त्र और आभूषण धारण करती है। वह विचित्र लेपन करती है। वह रूप-लावण्यवती और सौभाग्यवती है ॥ ९ ॥ वह देवी अठारह भुजा वाली है और सहस्र भुजा वाली है। अब क्रम से उसके दाहिने और बाएँ हाथों के आयुध कहते हैं ॥१० ॥ उसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घटा च पाशकः ॥११॥
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ।१२।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥

हाथों में अक्षमाला, कमल, बाण, तलवार, वज्र, गदा, चक्र, त्रिशूल, फरसा, शङ्ख, घण्टा, फाँसी, शक्ति, दण्ड, ढाल, धनुष, पानपात्र और कमण्डलु शोभित हैं । वह कमल पर बैठी है ॥ ११-१२ ॥ हे राजन् ! जो मनुष्य इस सर्वदेव-मयी ईश्वरी महालक्ष्मी की पूजा करता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ।१४।
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् ।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ।१५।
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ।
निशुम्भमाथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ।१६।

है, वह सब मनुष्यों और देवताओं का स्वामी होता है ॥ १३ ॥ हे नृप ! जो गौरी के देह से उत्पन्न हुई और केवल सत्त्वगुण प्रधाना है, वह शुम्भासुर को मारनेवाली साक्षात् सरस्वती है ॥१४ ॥ सरस्वती के आठ भुजाएँ हैं और वह बाण, मुसल, शूल, चक्र, शङ्ख, घण्टा, हल तथा धनुष धारण करती है ॥ १५ ॥ जो मनुष्य शुम्भ-निशुम्भनाशिनी सरस्वती का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥
विरिञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्य्या च दक्षिणे ।

भक्ति-पूर्वक पूजन करते हैं, वे सर्वज्ञ हो जाते हैं ॥ १६ ॥ हे राजन् ! मूर्तियों के ये स्वरूप तुमसे कहे । अब जगन्माताओं की अलग अलग उपासना सुनो ॥१७॥ जब महालक्ष्मी का पूजन करे, तब दाहिनी और बाईं ओर क्रम से महाकाली और महासरस्वती का पूजन करना चाहिये और उनके पीछे की ओर देवियों सहित तीनों देवताओं का पूजन करे ॥१८॥ मध्य में सरस्वती के साथ ब्रह्मा का, दक्षिण में गौरी के साथ रुद्र का और उत्तर में लक्ष्मी के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ।२०।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥

साथ हृषिकेश का पूजन करे और इनके सामने आगे कही हुई तीन देवियों की पूजा करे ॥१९॥ मध्य में अर्थात् महालक्ष्मी के सामने अष्टादश भुजावाली लक्ष्मी का और उनके वामभाग में अर्थात् महाकाली के सामने दशमुखी महाकाली का और दक्षिण भाग में महासरस्वती का, इस प्रकार महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिए ॥२०॥ हे राजन् ! यदि केवल अष्टादशभुजा का अथवा दशानना का अथवा अष्टभुजा का पूजन करना हो तो सम्पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी।२२।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तथा रुद्रविनायकौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् २३
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ।

अरिष्ट शान्ति के लिए दक्षिण और उत्तर की ओर काल और मृत्यु का पूजन करे। जब आठ भुजावाली शुम्भासुरमर्दिनी का पूजन करना हो तो इसकी नव शक्तियों का तथा रुद्र और गणेश का भी पूजन करे। 'नमो देव्यै' इस स्तोत्र से महालक्ष्मी की स्तुति करे ॥२१-२३॥ देवी के अवतारों के पूजन में उन्हीं अवतारों के चरित्र के स्तोत्र से स्तुति करे। यह अष्टादश भुजावाली देवी पूजनीय है। यही महिषमिर्दनी महालक्ष्मी, महाकाली और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२४॥
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५ ॥
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ।
पूजयज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥
अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।

महासरस्वती हैं । यही पुण्य-पापों की ईश्वरी और सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी हैं ॥२४-२५॥ जो पुरुष महिषासुरमर्दिनी का पूजन करता है वह जगत् का स्वामी होता है । तीनों लोकों को धारण करनेवाली तथा भक्तों से प्रीति करनेवाली चण्डिका का अर्घ्य, आभूषण, गन्ध,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूपदीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥ २७ ॥
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ।
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्।२६।
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ।

पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य और अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थों से पूजन करना चाहिए ॥२६-२७॥ रुधिर मिले हुए मांस के बलि से तथा मदिरा से पूजा करना चाहिए। प्रणाम, आचमनीय, चन्दन, सुगन्ध, कपूर और ताम्बूल से भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए। देवी के आगे भाग में कटे हुए सिरवाले इश्वरी द्वारा मोक्ष को प्राप्त महासुर महिष का पूजन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ।
कुर्यांच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः ।३१।
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ ३२ ॥
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् ।

करे । दक्षिण की ओर अग्रभाग में समग्र धर्मरूप ईश्वर चराचर को धारण करने वाले देवी के वाहन सिंह की पूजा करे और बुद्धिमान् पुरुष एकाग्रचित्त होकर हाथ जोड़कर इन चरित्रों से स्तुति करे । यदि समय न मिले तो केवल मध्यम चरित्र से ही स्तुति करे, किन्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदक्षिणा नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः
॥३३॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात् पायसं तिलसर्पिषा ।३४।
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥ ३५॥

केवल प्रथम या उत्तम चरित्र का पाठ न करे। आधे चरित्र का भी पाठ न करना चाहिये। ऐसा करने से निःसन्देह विघ्न होता है। स्तोत्र और मन्त्रों से जगदम्बिका की स्तुति करे और प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करके हाथ जोड़कर सावधान होकर जगद्धात्री से बारम्बार क्षमा माँगे। सप्तशती स्तोत्र के प्रत्येक मन्त्र अथवा महालक्ष्मी स्तोत्र (देव्या यया ततमित्याादि) से तिल, घी और खीर की आहुति दे। फिर सावधान होकर नाम और पदों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्राणानारोप्य चात्मनि ।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ३६
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ।
भुक्त्वा कामान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नु-
यात् ॥३७॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां

से देवी का पूजन करे ॥२८-३५॥ इसके बाद एकाग्रचित्त होकर हाथ जोड़कर आत्मा में प्राणों को रोक कर नम्रता से बहुत देर तक चण्डिका देवी का ध्यान करे और उन्हीं में तन्मय हो जाय ॥३६॥ इस प्रकार जो मनुष्य भक्तिपूर्वक परमेश्वरी का प्रतिदिन पूजन करता है, वह अभीष्ट सुख भोग करके अन्त में देवी के लोक को जाता है ॥३७॥ जो पुरुष भक्तों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तवत्सलाम् । भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत् परमेश्वरी ॥ ३८॥ तस्मात् पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् । यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ३९ ॥

इति वैकृतिकं रहस्यं समाप्तम् ।

पर दया करने वाला चण्डिका का प्रतिदिन पूजा नहीं करता, परमेश्वरी उसके पुण्यों को विफल करके उसे जन्मभर दुःख शोक से भस्म करती हैं ॥३८॥ इसलिये हे राजन् ! तुम सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी चण्डिका का कथित विधान से पूजन करो। इसके करने से सुख पावोगे ॥३९॥

इति वैकृतिकरहस्यभाषाटीका समाप्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ मूर्तिरहस्यम् ।

ऋषिरुवाच ।

नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ।
सा स्तुता पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्र-
यम् ॥१॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकन-
काम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा

ऋषि ने कहा—हे राजन् ! नन्दा भगवती नाम वाली जो नन्द से उत्पन्न होगी, उसकी भक्तिपूर्वक स्तुति और पूजा करने से मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है ॥१॥ वह देवी सुवर्ण के उत्तम आभूषणों से शोभित है, उसकी कान्ति कनक (सुवर्ण) के समान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ २ ॥ कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा ।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्माम्बुजासना
॥३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनघ ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥४॥
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ।

उत्तम है, उसके वस्त्र सुवर्ण के समान सुन्दर हैं, और वह देवी सुवर्ण के सदृश दीप्तिमान् है ॥२॥ कमल, अङ्कुश, पाश और शङ्ख से उसकी चारों भुजाएँ शोभित हैं। और उसके इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री, रुक्मा, और कमलासना ये नाम हैं ॥३॥ हे निष्पाप! मैंने रक्तदन्तिका नाम जिस देवी का वर्णन किया है, उसका सम्पूर्ण भयनाशक स्वरूप कहता हूँ, सुनो ॥४॥ रक्तवस्त्र, रक्तवर्ण, रक्त ही सब अङ्गों के आभूषणों से शोभित, रक्त आयुध, रक्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ ५ ॥
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका ।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ ६ ॥
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ।

नेत्र, रक्त केश वाली, अतिभयङ्कर, रक्त तीक्ष्ण नख वाली, रक्त आसन पर स्थित, रक्त दाँत वाली देवी भक्तों के वश में उसी प्रकार रहती है, जैसे स्त्री पति के अनुकूल रहती है। वह देवी पृथ्वी के समान विशाल है और उसके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं। वे दोनों स्तन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥८॥
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्त्ति सा ।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगीश्वरीति च ।९।
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् १०

बड़े लम्बे, बड़े मोटे, अत्यन्त मनोहर, कड़े, शोभायमान और आनन्द के समुद्ररूपी हैं । सब कामनाओं के देनेवाले दोनों स्तनों को देवी अपने भक्तजनों को पिलाती हैं ॥५-८॥ देवी की चारों भुजाएँ, खड्ग, पात्र, हल और मुसल से शोभित हैं । वह देवी रक्तचामुण्डा और योगीश्वरी नाम से विख्यात हैं और वह स्थावर जङ्गमरूप सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हैं । जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुस्तवम् ।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषित तनूदरी ॥१२॥
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।

पुरुष भक्तिपूर्वक उसकी पूजा करता है, वह चराचर में व्याप्त होता है ॥९-१०॥ जो पुरुष रक्तदन्तिका के इस स्तोत्र को पढ़ता है, देवी उसकी ऐसी सेवा करती है, जैसे स्त्री अपने प्रिय पति की ॥११॥ शाकम्भरी देवी का नीलवर्ण है, नील कमल के समान उसके नेत्र हैं, गम्भीर नाभि है और त्रिवली से भूषित उसका सूक्ष्म उदर है ॥१२॥ कड़े, ऊँचे, गोल, मोटे, समान और मांसल स्तन हैं, उसके हाथ में कमल है, उस पर भौंरे गुंजार कर रहे हैं और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुष्टिं शिलीमुखापूर्णां कमलं कमलालया ।१३।
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् ।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥१४॥
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी ।
शाकम्भरीं शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ।१५।
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम् ।

कमल पर ही वह राजमान है ॥१३॥ पुष्प, पल्लव, और फल से युक्त, अनेक सुन्दर रसोंवाले क्षुधा, तृष्णा, मृत्यु और वृद्धावस्था को दूर करनेवाले, शाकसमूह तथा चमकता हुआ धनुष धारण करती है। वह परमेश्वरी शाकम्भरी शताक्षी है और वही दुर्गा कही गई है ॥१४-१५॥ वही विशोका, दुष्टदमनी, उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका और विपत्तियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ॥
शाकम्भरीं स्तुवन्ध्यायञ्जपन्सम्पूजयन्नमन् ।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥१७॥
भीमाऽपि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥१८॥
चन्द्रहासं च डमरुं पानपात्रं च बिभ्रती ।

का विनाश करनेवाली पार्वती है ॥१६॥ जो मनुष्य शाकम्भरी का ध्यान, जप, पूजन उसकी स्तुति और उसको नमस्कार करता है, वह शीघ्र ही अन्न, पान, अमृत, और फल पाता है ॥१७॥ भीमा देवी भी नीलवर्णा है, उसकी दाढें और दाँत बड़े सुन्दर हैं, उसके नेत्र विशाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता।१६।
तेजोमण्डलदुर्दर्शा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥२०॥
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्त्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप २१

हैं, गोल और स्थूल कुच हैं ॥१८॥ वह चन्द्रहास, डमरू, कपाल और ढाल, तलवार धारण किये हैं। वह एकवीरा, कालरात्रि, कामदा नाम से कही जाती है ॥१६॥ तेजोमण्डलदुर्दर्शा, भ्रामरी, चित्रकान्तिभृत्, चित्रानुलेपना, चित्राभरण-भूषिता ॥२०॥ चित्रभ्रमरपाणि और महामारी इन नामों से प्रसिद्ध हैं। हे नृप! ये देवी की मूर्तियाँ शास्त्र में वर्णित हैं ॥२१॥ ये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्त्तिताः कामधेनवः ।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥
आख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥२३॥
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः॥२४॥

मूर्तियाँ जगन्माता चण्डिका की कामधेनु कहलाती हैं। हे राजन्! यह चरित्र परमगुप्त है। इसको किसी से कहना नहीं चाहिए ॥२२॥ हे राजन्! इन दिव्य मूर्तियों का इच्छानुसार फल देने वाला चरित्र है, बड़े यत्न से निरन्तर पढ़ो ॥२३॥ इन मन्त्रों के पढ़ने मात्र से प्राणी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥

इति मूर्तिरहस्यं शमाप्तम्।

ब्रह्महत्या के समान घोर सात जन्म के पापों से मुक्त हो जाते हैं ॥२४॥ हे राजन्! मैंने अत्यन्त गुप्त से गुप्त देवी का ध्यान तुमसे कहा। विधिपूर्वक यह ध्यान करने से इच्छानुसार फल मिलता है ॥२५॥

हति मूर्तिरहस्यभाषाटीका समाप्ता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।

परमेश्वरी ! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्रों अपराध होते रहते हैं । 'यह मेरादास है'-यह समझकर मेरे उन अपराधोंको तुम कृपापूर्वक क्षमा करो ।१। परमेश्वरी ! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करनेका ढंग भी नहीं जानता । क्षमा करो ॥२॥ ! देवी सुरेश्वरी ! मैंने जो मन्त्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।

वह सब आपकी कृपासे पूर्ण हो ॥३॥ सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरणमें जा 'जगदम्ब' कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओंके लिये भी सुलभ नहीं है ॥४॥ जगदम्बिके ! मैं अपराध हूँ, किंतु तुम्हारी शरणमें आया हूँ । इस समय दयाका पात्र हूँ । तुम जैसा चाहो, करो ॥५॥ देवि ! परमेश्वरी ! अज्ञानसे, भूलसे अथवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥ ८ ॥

बुद्धि भ्रान्त होनेके कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हों, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ ॥६॥ सच्चिदानन्दस्वरुपा परमेश्वरी ! जगन्माता कामेश्वरी ! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझपर प्रसन्न रहो ॥७॥ देवी सुरेश्वरी ! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तुकी रक्षा करनेवाली हो । मेरे निवेदन किये हुए इस जपको ग्रहण करो । तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ दुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे । नमस्ते जगद्-वन्द्यपादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥१॥

हे शिवे ! भक्तों को शरण देनेवाली तुम्हें नमस्कार है । हे दया करनेवाली सम्पूर्ण जगत् में व्यापक विश्वरूप तुम्हें नमस्कार है । संसार से तुम्हारे चरण कमल वन्दित हैं तुम्हें नमस्कार है । संसार के आवागमन से छुड़ाने वाली दुर्गे देवी रक्षा कर तुम्हें नमस्कार है ॥ १ ॥ चिन्त्यमानस्वरूप जगत् के चराचर में व्याप्त तुम्हें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे नमस्ते महायोगिनी ज्ञानरूपे । नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥२॥

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भया-

नमस्कार है, हे महायोग विज्ञान (ब्रह्मज्ञान) स्वरूप तुम्हें नमस्कार है । हे सत्य आनन्द-स्वरूप तुम्हें नमस्कार है । हे संसार के आवागमन को छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है । दुर्गे रक्षा कर ॥ २ ॥ अनाथ, दीन, तृष्णा में भ्रमण करनेवाले, भय से दुखी डरे हुए,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः। त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥३॥

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे। त्वमेका गतिर्देवि

बन्धन में पड़े हुए जीव को पार करने के लिये हे देवि तू एक ही है। जगत् के आवागमन को छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ ३ ॥ निर्जन वन में दारुण युद्ध में, शत्रुओं के मध्य में, जल में, संकट में, राजद्वार में, अंधकार आदि स्थानों में सहायता करने वाली कारणस्वरूप एक तू ही गति है तुम्हें नमस्कार है, हे संसार के आवागमन को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥४॥

अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् । त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुर्नमस्ते जगत्तारिणी

छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है । दुर्गे रक्षा कर ॥ ४ ॥ जो पार न हो सके अत्यन्त दुस्तर घोर विपत्तियों के समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों के लिये तू ही एक नौकारूप पार करने की गति है, तुम्हें नमस्कार है । हे संसार के आवागमन को छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्राहि दुर्गे ॥५॥

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो । त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥६॥

दुर्गे रक्षा कर ॥ ५ ॥ हे चंडिके ! तुम्हें नमस्कार ! चंड आदि भयंकर जो राक्षस हैं और इन्द्र के अशेष शत्रुओं का नाश करनेवाली तू ही एक गति समस्त विघ्नों को हरनेवाली तुम्हें नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ ६ ॥ तू ही एक हमेशा सेवा करानेवाली सत्यवादिनी और क्रोधकरनेवालों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमेवाघमावाधृतासत्यवादिनि जाता-
जिता क्रोधनात् क्रोधनिष्ठा। इडा-पिंगला
त्वं सुषुम्णा च नाडी नमस्ते जगत्ता-
रिणी त्राहि दुर्गे ॥७॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे सरस्व-

में एक ही क्रोध की निष्ठा है। इड़ा (सूर्य स्वर) पिंगला (चन्द्र स्वर) सुषुम्ना (दोनों मिले स्वर) नाड़ी रूप तू ही है, तुम्हें नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुड़ाने वाली तुम्हें नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ ७ ॥ हे देवि ! हे दुर्गे ! हे शिवे ! हे भीमनादे !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे । विभूतिः शची
कालरात्रिः सती त्वं नमस्ते जगत्ता-
रिणी त्राहि दुर्गे ॥८॥

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम् ।

(भयंकर शब्दवाली) नित्य प्रति सब सिद्धि प्रदान करनेवाली सज्जनों की विभूति कालरात्रि स्वरूप तुम्हें नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुड़ानेवाली तुम्हें नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ ८ ॥ देवता, सिद्ध, विद्याधर, मुनि, उत्तम राक्षस, बीमारी से सताये हुए, राजा के बन्दीगृह में गये हुए, चोरों से सताये हुए मनुष्यों की रक्षा करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीड़ितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥९॥
इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम् ।
त्रिसन्ध्यमेकसंध्यं वा पठनाद् घोरसंक-
टात् ॥१०॥

वाली तुम्हें नमस्कार है। हे देवि ! हे दुर्गे ! तू एक ही है प्रसन्न हो ॥ ९ ॥

यह आपदुद्धाराष्टक स्तोत्र मैंने कहा है। इसका कोई भी जो तीन बार अथवा एक बार पाठ करेगा, वह निश्चय ही समस्त संकटों से मुक्त हो जायगा, वह मर्त्यलोक, स्वर्गलोक अथवा रसातल किसी भी लोक में क्यों न रहता हो ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसा-
तले । सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्
भक्तिमान् सदा ॥११॥

स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं
पदम् । पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति
भूतले ॥१२॥

स्तवराजमिमं देवि संक्षेपात् कथितं
मया ॥१३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्र-मुत्तमम् । येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥ न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं

भगवान शिव ने पार्वती से कहा—हे देवी ! मैं इस उत्तम कुञ्जिकास्तोत्र का वर्णन करता हूँ, जिस कुञ्जिका मन्त्र के प्रभाव से ही चण्डीपाठ शुभप्रद होता है ॥१॥ कवच, अर्गला, कीलक और रहस्य दुर्गासप्तशती पाठ के लिए अत्यावश्यक हैं, ये सभी केवल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीलकं न रहस्यकम् । न सूक्तं नापि
ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अतिगुह्यतरं देवि ! देवानामपि दुर्लभम्
॥३॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव

कुञ्जिका स्तोत्र के पाठ मात्र से ही दुर्गासप्तशती पाठ का पूरा फल प्राप्त होता है। हे देवी ! यह कुञ्जिकास्तोत्र अत्यन्त गोपनीय एवं देवताओं के लिए भी दुर्लभ है ॥२-३॥ अतः हे पार्वती ! अपने गुप्तांग के सदृश इसे गुप्त ही रखना चाहिये। इस कुञ्जिकास्तोत्र के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्वती । मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनो-
च्चाटनादिकम् ।।४।। पाठमात्रेण संसिद्-
ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।

मन्त्रः-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै
विच्चे । ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय-

पाठमात्र से मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन तथा उच्चाटन आदि सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं ।।४।।

मन्त्र—'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे०' से लेकर 'हं सं लं क्षं फट् स्वाहा' तक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्वालय ज्वाल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि । नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥

कुञ्जिका मन्त्र है ।

कुञ्जिकास्तोत्र—शिवस्वरूपिणी, मधु-कैटभनाशिनी, महिषासुरघातिनी और शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्य को नष्ट करने वाली आपको नमस्कार है ॥ १-२ ॥ हे महादेवी !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भाऽसुरघा-
तिनि ॥२॥ जाग्रतं हि महादेवि! जपं सिद्धं
कुरुष्व मे। ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी
प्रतिपालिका ॥३॥ क्लींकारी कामरू-
पिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते। चामुण्डा

आप मेरे जप को सिद्ध करें। आप ऐं रूप से जगत् की उत्पत्ति, ह्रीं रूप से पालन, क्लीं रूप से संहार करने वाली, चामुण्डा रूप से चण्ड नामक दैत्य का वध करने वाली, यं स्वरूप से भक्तों को अभीष्ट वर देने वाली तथा विच्चे रूप से अभय प्रदान करने वाली, नवार्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥४॥ विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्र-रूपिणि ॥५॥ धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी। क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६॥ हुं हुं

मन्त्र स्वरूप वाली हे जगदम्बे ! आप को नमस्कार है ॥३-५॥

धां धीं धूं स्वरूप धूर्जटी (शंकर) की पत्नी, वां वीं वूं स्वरूप वाग् (वाणी) को अधीश्वरी सरस्वती, क्रां क्रीं क्रूं रूपिणी कालिका, शां शीं शूं स्वरूपिणी शान्ति देवी ! मेर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥७॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।

कल्याण करें। ॥ ६ ॥ हुं हुं स्वरूपवाली हुंकाररूपिणी देवी, जं जं जं रूपिणी जम्भनादिनी देवी तथा भ्रां, भ्रीं भ्रूं स्वरूपवाली भैरवी, भद्रा तथा भवानी आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७ ॥ 'अं कं चं टं तं०' से 'कुरु कुरु स्वाहा' तक पाठ करें। पां पीं पूं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी
तथा। म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्णा-कुब्जि-
कायै नमो नमः। सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या
मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥८॥ इदं तु कुञ्जिका-

स्वरूपिणी पार्वती, पूर्णा, खां खीं खूं रूपिणी खेचरी एवं म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्णरूपिणी कुञ्जिका देवी को नमस्कार है। तथा सां सीं सूं स्वरूपवाली दुर्गासप्तशती के समस्त मन्त्रों की सिद्धि हे देवि ! मुझे प्राप्त हो ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे । अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती ! ॥९॥

यस्तु कुञ्जिकया देवि ! हीनां सप्तशतीं पठेत् न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥१०॥

फलश्रुति–इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठमात्र से ही दुर्गासप्तशती के समस्त मन्त्र सिद्ध होते हैं। हे पार्वती ! इस गुप्त स्तोत्र का रहस्य अभक्त जनों को नहीं बताना चाहिए ॥ ९ ॥

हे देवि ! जो इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठ बिना दुर्गासप्तशती का पाठ करता है, उसे जंगल में रुदन करने के समान सिद्धि प्राप्त नहीं होती ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

मा! मैं न मन्त्र जानता हूँ, न यन्त्र; अहो! मुझे स्तुतिका भी ज्ञान नहीं है। न आवाहनका पता है न ध्यानका। स्तोत्र और कथाकी भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है; परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनु-सरण—तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशोंको —समस्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः

दुःख-विपत्तियों को हर लेनेवाला है ॥१॥ सबका उद्धार करनेवाली कल्याणमयी माता! मैं पूजाकी विधि नहीं जानता, मेरे पास धनका भी अभाव है, मैं स्वभावसे भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजाका सम्पादन हो भी नहीं सकता; इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवामें जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना; क्योंकि कुपुत्रका होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥२॥ मा! इस पृथ्वीपर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत-से हैं, किन्तु उन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे

सबमें मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा बालक हूँ; मेरे-जैसा चञ्चल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है; क्योंकि संसारमें कुपुत्रका होना सम्भव है, कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥३॥ जगदम्ब! मातः! मैंने तुम्हारे चरणोंकी सेवा कभी नहीं की, देवी! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया; तथापि मुझ-जैसे अधमपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ५

जो तुम अनुपम स्नेह करती हो इसका कारण यही है कि संसारमें कुपुत्र पैदा हो सकता है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥४॥ गणेशजीको जन्म देनेवाली माता पार्वती [अन्य देवताओं की आराधना करते समय] मुझे नाना प्रकारकी सेवाओंमें व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्षसे अधिक अवस्था बीत जानेपर मैंने देवताओंको छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा-पूजा मुझसे नहीं हो पाती; अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलनेकी आशा नहीं है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ।६।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किसकी शरणमें जाऊँगा ॥५॥
माता अपर्णा ! तुम्हारे मन्त्रका एक अक्षर भी कानमें पड़ जाय तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाकके समान मधुर वाणीका उच्चारण करनेवाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकालतक निर्भय विहार करता रहता है। जब मन्त्रके एक अक्षरके श्रवणका ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ।७।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे

जपमें लगे रहते हैं उनके जपसे प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा ? इसको कौन मनुष्य जान सकता है ॥६॥ भवानी ! जो अपने अङ्गोंमें चिताकी राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहनेवाले) हैं, मस्तकपर जटा और कण्ठमें नागराज वासुकिको हारके रूपमें धारण करते हैं तथा जिनके हाथमें कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है ? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहणकी परिपाटीका फल है, तुम्हारे साथ विवाह होनेसे ही उनका महत्त्व बढ़ गया ॥७॥ मुखमें चन्द्रमाकी शोभा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।८।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं
रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः। श्यामे त्वमेव

धारण करनेवाली मा! मुझे मोक्षकी इच्छा नहीं है, संसारके वैभवकी भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञानकी अपेक्षा है, न सुख की आकाङ्क्षा; तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी' इन नामोंका जप करते हुए बीते ॥८॥ मा श्यामा! नाना प्रकारकी पूजन-सामग्रियोंसे कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करनेवाली मेरी वाणीने कौन-सा अपराध नहीं किया है! फिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि किञ्चन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा

भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथपर जो किञ्चित् कृपादृष्टि रखती हो, मा! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे-जैसे कुपुत्रको भी आश्रय दे सकती है ॥९॥ माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियोंमें फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ [पहले कभी नहीं करता रहा] इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यासससे पीड़ित बालक माताका ही स्मरण करते हैं ॥१०॥ जगदम्ब! मुझपर जो तुम्हारी पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करुणास्ति चेन्मयि । अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा
न हि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं
तथा कुरु ॥१२॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्त्रोतं सम्पूर्णम् ।

दया है इसमें यहाँ आश्चर्य ही क्या है; अपराधों पर अपराध करते रहने पर भी माता पुत्र की उपेक्षा नहीं करती ॥११॥ जैसे मेरे समान कोई पापी नहीं है वैसे तेरे समान पापों का नाश करने वाली दूसरी नहीं है, ऐसा जानकर, हे महादेवि ! जैसा योग्य समझो वैसा करो ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री आद्या कात्यायनी अष्टकम्

श्रीमाता जगदीश्वरी भगवती कात्यायनी शङ्करी
ब्रह्मोपेन्द्र सुरेन्द्रवन्दितपदा चन्द्रानना शांभवी ।
इन्द्रप्रस्थ महापुरी परिसरे छत्तपु रेऽस्मिन् शुभे
ग्रामे स्वाद्य सुशक्तिपीठ निलये दिष्टचाऽद्य राराजते ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आद्यामागमवेद्य विश्व विभवामाबालवृद्ध स्तुताम्
आदिक्षान्तमयीमतीव सुलभाराध्यामनन्दोज्ज्वलाम् ।
आपाताल नभस्थलान्त भुवन व्याप्तामममेयामुमाम्
आपीनोरज शोभिदेह लतिकां कात्यायनीं भावये ॥२॥
द्यामुर्वीमथ दिक्चतुष्टयमपि व्याप्य स्थितं किन्न्विदम्
तेजः पुञ्जमिति प्रनष्टमतिषु स्वर्लोकपालादिषु ।
तेषां गर्वमपोह्य तत्त्वधिषणां तेभ्योऽददात्सादरम्
या सा हैमवती तया जगदिदं संरक्ष्यते सर्वदा ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कात्याश्चर्यं बलान्विता सुललना दुष्टां च दृप्तामिमाम्
हन्यामित्यतिरोषवेगमसुरं शुम्भञ्च तस्यानुजम्।
हुंकारक्षत धूम्रलोचन महामाया हि कात्यायनी
एकाकिन्यपि लीलया समवधीत्तस्यै महत्यै नमः ॥४॥
यस्य स्मृत्यापि देवाः प्रबलमतिभयाद्दीनदीना अभूवन्
यस्योग्रं शैलतुल्यं पृथुवपुरभवद्भीषणं माहिषं तत्।
तं माया युद्धचण्डं युधियमसदनं यापयन्ती सरोषम्
लास्यं तन्मूर्ध्नि चक्रे निरवधिकरुणाया लभेमात्मरक्षाम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीलालङ्कृत कुन्तलौ परिलसद्दिव्यैः प्रसूननवैः
आनम्रत्रिदशोत्तम प्रियवधू सेवार्थिनी मूर्धजैः
आपीठं झटिति प्रसारित महा शोभावहौ सुन्दरौ
श्रीमातुश्चरणौ भजेम शरणं भूत्यै तयोः पूजनम् ॥६॥
शक्तिश्चेत्सहजा शिवेन सहिता शक्तो भवेदीश्वरः
नैवं चेद् भगवान् शिवोऽपि न भवेच्छक्तः स्वयं स्पन्दितुम्
तस्माल्लोकचतुर्दशेऽपि न भवेच्छक्तयाः परं दैवतम्
शक्तयामेव जगत्प्रतिष्ठितमिदं कात्यायनी मातरि ॥७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीठं यत्प्रथितं सुमंगलकरं चाद्यं च कात्यायनि
श्रीमातस्तमिह त्वदीयमधिष्ठितिष्ठन्ती जगद्रक्षसि ।
छत्तपुर्यंधिवासिनि श्रितजनाभीष्टप्रदे शांभवि
शक्त्यौघैः परिपालिताण्डनिवहे दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥८॥
श्री वाण्या रमया च सेवित महाकात्यायनीमम्बिकाम्
आद्यामत्र विभाव्य योगबलतः नारायणीं मातरम् ।
श्रीदुर्गाचरणानुरागमहिताः श्री नागपालाः स्थिराम्
चक्रुर्यत्तदतीव सर्वभेदरहितम् श्रेयः प्रदं मंगलम् ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट-भाग

लेखक

याज्ञिकसम्राट् पण्डित वेणीराम गौड वेदाचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शतचण्डी और सहस्रचण्डीकी विधि

शतचण्डी को साङ्गोपाङ्ग सम्पादन करने के लिये यजमान सर्वप्रथम यज्ञमण्डप बनवावे। पश्चात् शतचण्डी प्रारम्भ होने से एक दिन पूर्व उपवास और सर्वप्रायश्चित्त करे। अनन्तर शतचण्डी प्रारम्भ होनेवाले दिन स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्वस्तिवाचनपूर्वक शतचण्डी के निमित्त सङ्कल्प करे। पश्चात् पञ्चाङ्ग और आचार्यादिका वरण करने के बाद यजमान अपने परिवार के सहित बाजे-गाजे के साथ यज्ञमण्डप में पश्चिम द्वार से प्रवेश करे। यदि यज्ञमण्डप न बना हो तो अपने निवासस्थान के उस कमरे में प्रवेश करें, जिसमें शतचण्डी (दुर्गापाठ) की व्यवस्था की हो। अनन्तर आचार्य द्वारा दिग्रक्षण, मण्डपप्रोक्षण अथवा पूजास्थानप्रोक्षण, वास्तुपूजन, न्यास पूर्वक, प्रधानपूजन (दुर्गा देवी का पूजन), योगिनीपूजन क्षेत्रपालपूजन, ग्रहपूजन, असंख्यात रुद्रपूजन करें। पश्चात् अखण्ड दीपकपूजन, ज्योतिःपूजन, जयन्तीपूजन, कुमारीपूजन, बटुकपूजन, दुर्गापुस्तकपूजन, और ब्राह्मणपूजन करें। अनन्तर आर्ति, मन्त्र-पुष्पाञ्जलि, प्रदक्षिणा, अभिवादन, क्षमाप्रार्थना और दुर्गास्तुति आदि करें। पश्चात् दुर्गापाठ करने वाले ब्राह्मण सविधि दुर्गापाठ करें। इस प्रकार प्रतिदिन यजमान स्नानादि नित्यकर्म करके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वस्तिवाचनपूर्वक सङ्कल्प कर आवाहित देवताओं और ब्राह्मणों का पूजन, आरती, पुष्पाञ्जलि करे।

दुर्गा का सौ पाठ हो जाने पर उसका दशांश हवन करे। हवन करने के लिये सर्वप्रथम कुण्ड अथवा स्थण्डिल बनवावे। पश्चात् अरणिपूजन कर अरणिमन्थन द्वारा अग्नि प्राकट्य करे। अनन्तर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापन और कुशकण्डिका करे। पश्चात् आघारावाज्यभागत्याग कर, गणेशाम्बिका का हवन करे। अनन्तर ग्रहहवन और दुर्गा सप्तशती से हवन करे। दुर्गासप्तशती का हवन पूर्ण होने के बाद आवाहित देवताओं का हवन करे। अनन्तर अग्निपूजन, स्विष्टकृत्, नवाहुति दशदिक्पालादि बलि, पूर्णाहुति और वसोर्धारीनिपातन करें। पश्चात् कुण्डाग्नि की परिक्रमा कर कुण्ड की भस्म लगावे। अनन्तर ब्रह्मा को पूर्णपात्र दान करे। पश्चात् प्रधान पीठादिका एवं गोदान का सङ्कल्प कर आचार्य को प्रदान करे। पश्चात् दुर्गाजीभा उत्तराङ्ग पूजन कर कूष्माण्ड-बलिदान करे। अनन्तर आरती और मन्त्रपुष्पाञ्जलि कर हवन का दशांश तर्पण और तर्पणका दशाँश मार्जन करे। पश्चात् छाया पात्रदान करे। अनन्तर अभिषेक और अवभृथस्नान करके आचार्यादि ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर देवविसर्जन करे। पश्चात् आचार्य से रक्षाबन्धन कराकर तिलक लगवावे और आशीर्वाद ग्रहण करे। अनन्तर सौ ब्राह्मणों को भोजन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करावे। इसी प्रकार सहस्रचण्डी की भी विधि है। सहस्रचण्डी में पाठ करनेवालों की संख्या १०० अथवा ५० होती है। सहस्रचण्डी में १००० ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

शतचण्डी और सहस्रचण्डी का महत्त्व मन्त्रमहोदधि, रुद्रयामल और वाराहीतन्त्र में विस्तार से लिखा है। सहस्रचण्डी की आवश्यकता और महत्ता के सम्बन्ध में मेरी 'यज्ञ-मीमाँसा' पुस्तक देखनी चाहिये।

दुर्गा के पाठ, हवन, बलिदान आदि विषयों का विचार

१. दुर्गासप्तशती के नित्य पाठ में अर्गला, कीलक और कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए।

अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत्।
कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत् त्रयं पठेत्॥

२. दुर्गासप्तशती का एक ही दिन में कई पाठ करना हो, तो कवच, अर्गला और कीलक का एक ही बार पाठ करना चाहिये, बार-बार नहीं।

३. दुर्गासप्तशती के पाठ के अन्त में रहस्यत्रयका पाठ करना चाहिए।

दुर्गापाठ के प्रारम्भ में और दुर्गापाठ के अन्त में नवार्णमन्त्र का जप १०८ बार अवश्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना चाहिए ।

शतमादौ शतं चान्तें जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् ।
चण्डीं सप्तशतीं मध्ये सम्पुटोऽयमुदाहृतः ।।
(डामरतन्त्र)

५. दुर्गापाठ के सभी पाठ में नवार्णमन्त्र का आद्यन्त जप करना चाहिये ।

६. दुर्गा के प्रत्येक पाठ में प्रारम्भ में रात्रिसूक्त और अन्त में देवीसूक्त का पाठ करना चाहिए ।

रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्पे सप्तशतीस्तवम् ।
अन्ते तु जपनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः ।।
(मारीचकल्प)

७. दुर्गापाठ करते समय अध्यायके अन्त में 'इति' कहने से लक्ष्मी का नाश, 'वध' कहने से कुलका नाश और 'अध्याय' कहने से अपने प्राण का नाश होता है । अतः केवल 'मार्कण्डेयपुराणे०' इत्यादि कहना चाहिए ।

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुलविनाशकः ।
अध्यायो हरते प्राणान मार्कण्डेयादिकं वदेत् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८. दुर्गापाठ करते समय अध्याय के मध्य में विराम नहीं करना चाहिए। यदि किसी कारण विराम करना हो, तो पुनः उस अध्याय का प्रारम्भ से पाठ करना चाहिए।

'यावन्न पूर्यतेऽध्यायस्तावन्न विरमेत् पठन्।'

९. दुर्गापाठ करनेवाले को अपने हाथमें दुर्गा की पुस्तक लेकर पाठ नहीं करना चाहिए और पाठ करते समय अपना सिर भी नहीं हिलाना चाहिए।

आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम्।
अनुक्रमात् पठेद्देवि शिरः कम्पादिकं विना॥
(वाराहीतन्त्र तथा चिदम्बरसंहिता)

१०. दुर्गापाठ प्रारम्भ करने के समय दुर्गा का पूजन कर पुस्तक को प्रणाम करके ही पाठ प्रारम्भ करना चाहिए और पाठ की समाप्ति में भी पुस्तकको प्रणाम करना चाहिए। इससे पाठकर्ता को शीघ्र ही फल की प्राप्ति होती है।

'पुस्तकं पूजयेद् भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये।'

११. जो मनुष्य मनसें ही दुर्गास्तोत्रका पाठ करता है अथवा जोर-जोरसे मन्त्रका जप करता है; ये दोनों ही उसी प्रकार निष्फल हैं, जिस प्रकार फूटे घड़ेमें जलका रखना।

१२. शतचण्डी ६ दिनमें अथवा ५ दिनमें होती है। ५ दिनमें होनेवाली शतचण्डी में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्धिक्रम से दुर्गा का पाठ होता है। इसमें प्रथम दिन एक पाठ, द्वितीय दिन दो पाठ, तृतीय दिन तीन पाठ और चतुर्थ दिन चार पाठ होते हैं। पंचम दिन हवनादि कर शतचण्डी समाप्त करना चाहिए। 'पंचमेऽहनि समाप्तिः स्यात्' ऐसा स्पष्ट लिखा है।

पांच दिन की शतचण्डी वृद्धिक्रम से दुर्गा पाठ करने के लिए १० ब्राह्मण होने चाहिएं। आचार्य और ब्रह्मा पृथक होते हैं।

नव दिन की शतचण्डी में दुर्गापाठ करनेवाले १० ब्राह्मण होने चाहिएँ। आचार्य, ब्रह्मा आदि अलग होते हैं।

शतचण्डी में हवन-सामग्री सवा मन लगती है।

१३. कुछ आचार्यों का मत है कि शतचण्डी ऐसे दिन प्रारम्भ करना चाहिए, जिससे दुर्गा के १०० पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा को पूर्ण हो जायें।

१४. शतचण्डी अथवा सहस्रचण्डी का दशांश हवन दुर्गा के ७०० श्लोकों से अथवा केवल नवार्ण-मन्त्र से अथवा 'नमो देव्यै महादेव्यै०' इस मन्त्र से अथवा 'जयन्ती मङ्गला काली०' इस मन्त्र से किया जा सकता है।

१५. शतचण्डी के दशांश हवन में 'ॐ नमो देव्यै महादेव्यै०' इस मन्त्र से १० माला अथवा एक माला द्वारा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस नवार्ण मन्त्र से १० माला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
अथवा १ माला द्वारा हवन करना चाहिए।

१६. नवार्ण मन्त्र का केवल घृत से हवन करना चाहिए।

१७. नवरात्रि में नवमी को हवन करना चाहिए अथवा अपनी कुल परम्परा के अनुसार अष्टमी या नवमी को दिन में अथवा रात्रि में हवन करना चाहिए। अथवा अष्टमी और नवमी की सन्धि में हवन करना चाहिए।

१८. दुर्गा के सम्पुटित पाठ में दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों से ७०० ही आहुति देनी चाहिए।

कदाचित्सम्पुटैर्युक्तं पठेत्सप्तशतीस्तवम्।
ससम्पुटं पठेद्धोमो हुनेत् सप्तशताहुतीः॥

(दुर्गोपासनाकल्पद्रुम)

१९. नवमी को बलिदान करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

नवम्यां बलिदानं तु कर्तव्यं वै यथाविधि।
जपं होमं च विधिवत् कुर्यात्तत्र विभूतये॥

(कालिकापुराण)

नवमी तिथि को यथाविधि बलिदान करना चाहिए। ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधिवत् जप और हवन करना चाहिए।

नवम्यामपराह्ने तु बलिदानं प्रशस्यते।
दशमीं वर्जयेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा॥
(कालिकापुराण)

२०. नवमी तिथि को अपराह्न में बलिदान करना प्रशस्त कहा गया है। बलिदान के लिये दशमी तिथि का परित्याग कर देना चाहिए। इसमें विचार की आवश्यकता नहीं है।

२१. अष्टमी तिथि को बलिदान करने से हानि होती है–

'बलिदाने कृतेऽष्टम्यां पुत्रभङ्गो भवेन्नृप।'
(देवीपुराण)

'हे नृप! अष्टमी तिथि का बलिदान करने से पुत्र का भंग होता है।'

'अष्टम्यां बलिदानेन पुत्रनाशो भवेद् ध्रुवम्।'
(कालिकापुराण)

'अष्टमी तिथि को बलिदान करने से निश्चित ही पुत्र का नाश होता है।'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२२. सात्त्विक मनुष्यों को दुर्गापूजा में कूष्माण्ड, नारिकेल, इक्षुदण्ड, नींबू और उड़द आदि की बलि देनी चाहिए।

२३. दुर्गादेवी का विसर्जन नवमी और दशमी दोनों ही दिन हो सकता है। वस्तुतः दुर्गाका विसर्जन दशमी को ही प्रातःकाल करना चाहिए।

२४. दुर्गा का मुख दक्षिण दिशा में करने से वह शुभ देनेवाली, पूर्व दिशा में मुख करने से जय को देनेवाली और पश्चिम दिशा में मुख करने से प्रत्येक कार्य को सिद्ध करनेवाली कही गयी है। उत्तर दिशा में दुर्गा का मुख नहीं करना चाहिए।

याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वस्यां जयवर्द्धिनी।
पश्चिमाभिमुखी नित्या न स्थाप्या सौम्यदिङ्मुखी ॥

२५. शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदि में १०० अथवा ९ अथवा १ कुमारी का प्रतिदिन पूजन करना चाहिए। अथवा यथाशक्ति कुमारी का पूजन करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन एक-एक कन्या की संख्या की वृद्धिकर उसका पूजन करना चाहिए।

२६. शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदि में जातिभेद से कन्या के पूजन का अलग-अलग फल इस प्रकार लिखा है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) विप्रां सर्वेष्टसंसिद्धयै यशसे क्षत्रियोद्भवाम् ।
वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत् ।
(ख) ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् ।।
लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ।
दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद् विधिना नरः ।।

२७. शतचण्डी आदि में पूजनार्थ वर्ज्य कन्या इस प्रकार कही गयी है–

हीनाधिकांगी कुष्टाधिविकारां दुष्कुलां तथा ।
ग्रन्थिस्फुटितसर्वाङ्गां रक्तपूयव्रणाङ्किताम् ।।
जात्यन्धां केकरां काणां कुरूपां तनुरोमशाम् ।
सन्त्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसमुद्भवाम् ।।

२८. शतचण्डी और सहस्रचण्डी सर्वदा की जा सकती है । इसके लिये उत्तरायण और दक्षिणायन तथा गुरु–शुक्र के अस्तका विचार अनावश्यक है ।

२९. दुर्गा का पूजन शुक्रास्त आदि में भी करना चाहिए । निर्णयसिंधु के द्वितीय परिच्छेद में लिखा है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नष्टे शुक्र तथा जीवे सिंहस्थे च बृहस्पतौ ।
कार्या चैव स्वदेव्यर्चा प्रत्यब्दं कुलधर्मतः ॥
(धर्मप्रदीप)

'शुक्र तथा बृहस्पति के अस्त हो जाने पर सिंह के बृहस्पति में कुलधर्मानुसार अपनी देवी का अर्चन-पूजन प्रति वर्ष करें।'

३० शतचण्डी अथवा सहस्रचण्डी में अखण्ड दीपक यदि बुझ जाय, तो 'ॐ जयन्ती मङ्गला काली०' इस मन्त्र से अथवा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस नवार्ण मन्त्र से अथवा 'ॐ देवि ! प्रपान्नार्तिहरे प्रसीद०' (दुर्गा ११।३) से पाठ का दशांश हवन करे। अथवा 'करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यपहन्तु चापदः' (दुर्गा ५।८१) इस मन्त्र से दशांश हवन करे।

३१. नवरात्रि का पर्व प्रतिवर्ष चार बार आता है–चैत्र, आश्विन, आषाढ़ और माघ में।

चैत्रेऽऽश्विने तथाऽऽषाढे माघे कार्यो महोत्सवः ।
नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः ॥
(देवीपुराण ३२४।२१)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्विने मधुमासे वा तपोमासे शुचौ यथा
चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फलदायकम् ॥
(देवीभागवत, माहात्म्य ११३१)

३२. दुर्गायज्ञ में 'दुर्गा सप्तशती' के द्वारा हवन होता है। प्रतिदिन अथवा पूर्णाहुति के दिन 'दुर्गा सहस्रनामावली' (देवी सहस्रनामावली) से हवन करना चाहिए। दुर्गा यज्ञ में हवन करनेवाले ९ विद्वान् होते हैं। आचार्य, ब्रह्मा और द्वारपाल आदि सब मिलाकर २१ अथवा १६ विद्वान् होते हैं। यह यज्ञ ९ दिन में होता है। दुर्गायज्ञ में हवनसामग्री १५ मन अथवा १० मन लगती है।

३३. जो मनुष्य प्रतिदिन दुर्गा का पाठ करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती और उसकी सुखपूर्वक ज्ञानावस्था में मृत्यु होती है।

३४. जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व और सायंकाल दीपक जलाने के अनन्तर दुर्गा के मन्दिर में अथवा दुर्गा के चित्र को अपने सामने रखकर घृत का दीपक जलाकर दुर्गा का ध्यान करता हुआ दुर्गा सप्तशती के चतुर्थाध्याय की 'शक्रादि स्तुति' का पाठ करता है, वह विघ्न-बाधाओं से सर्वदा मुक्त रहता है और उसको मनोभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३५ जो मनुष्य निशीथ काल के बाद घृत का दीपक जलाकर दुर्गा का ध्यान करता हुआ 'ॐ दुर्गे स्मृता०' इस मन्त्र का प्रतिदिन ११ माला का जप करता है, उसको धन की प्राप्ति होती है और उसकी सर्वविध विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं।

३६. जो मनुष्य 'ॐ शूलेन पाहिनो देवि०' इस मन्त्र को १२५०००० (बारह लाख पचास हजार) बार जपकर सिद्धकर लेता है, वह उक्त मन्त्र को ६ बार कहकर जिसको झाड़ देता (फूंक देता) है, उसका अर्धकपारी (मस्तक का आधा दर्द) रोग दूर हो जाता है।

दुर्गाके प्रत्येक अध्यायके अन्तकी हवन-सामग्री

प्रथम अध्याय के अन्त में–मधु और पुष्प से हवन करे।

द्वितीय अध्याय के अन्त में–गुग्गुल से हवन करे।

तृतीय अध्याय के अन्त में–गुड़ से हवन करे।

चतुर्थ अध्याय के अन्त में–घृत से हवन करे।

पंचम अध्याय के अन्त में–बिल्वपत्र से हवन करे।

षष्ठ अध्याय के अन्त में–कूष्माण्ड (पेठा) से हवन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम अध्याय के अन्त में–अनेक प्रकार के पुष्पों से हवन करे।
अष्टम अध्याय के अंत में–लाल पुष्पों से हवन करे।
नवम अध्याय के अंत में–जावित्री और जायफल से हवन करे।
दशम अध्याय के अंत में–कपूर तथा कस्तूरी से हवन करे।
एकादश अध्याय के अंत में–लोध्र और घृत से हवन करे।
द्वादश अध्याय के अंत में–अमरूद और दशाङ्ग धूप से हवन करे।
त्रयोदश अध्याय के अंत में–तिलमोगरा के पुष्पों से हवन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती

"नीराजनं सुमंगल्यम् कर्पूरेण समन्वितम् ॥
चन्द्रार्कवह्नि सदृशं महादेवी नमस्तुते ॥"

जग जननी जय जय, मां जगजननी जय जय ।
भयहारिणि भवतारिणि भवभामिनि जय जय ॥ १ ॥ ॐ जगजननी
तू ही सतचित सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर, परशिव सुरभूपा ॥ २ ॥ ॐ जगजननी
आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्द राशी ॥ ३ ॥ ॐ जगजननी
अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी ।
कर्त्ता विधि भर्ता हरि, हर संहारकारी ॥ ४ ॥ ॐ जगजननी
तू विधिवधू रमा तू, उमा महामाया ।
मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया ॥ ५ ॥ ॐ जगजननी
राम कृष्ण तू सीता, ब्रजरानी राधा ।
तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ॥ ६ ॥ ॐ जगजननी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दशविद्या नवदुर्गा, नाना शस्त्र करा।
अष्ट मातृका योगिनी, नव नव रूप धरा ॥ ७ ॥ ॐ जगजननी
तू परधाम निवासिनी, महाविलासिनी तू।
तू ही श्मशान विहारिणि, ताण्डव लासिनि तू ॥ ८ ॥ ॐ जगजननी
सुर मुनि मोहिनि सौम्या, तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट सरूपा, प्रलयमयी धारा ॥ ९ ॥ ॐ जगजननी
तू ही स्नेह सुधामयि, तू अतिगरलमना।
रत्न विभूषित तू ही, तू ही अस्थितना ॥ १० ॥ ॐ जगजननी
मूलाधारनिवासिनि, इह-पर सिद्धि प्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वर दे ॥ ११ ॥ ॐ जगजननी
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेद प्रदर्शिनि वाणी, विमले वेदत्रयी ॥ १२ ॥ ॐ जगजननी
हम अतिदीन दुःखी मां, विपद-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥ १३ ॥ ॐ जगजननी
निज स्वभाववश जननी, ! दया दृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि ! चरण-शरण दीजै ॥ १४ ॥ ॐ जगजननी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती श्री अम्बा जी

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमदको। मैया
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ ॐ जय

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। मैया
रक्तपुष्प बनमाला, कण्ठन पर साजै ॥ ॐ जय

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। मैया
सुर-नर मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ ॐ जय

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मैया
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥ ॐ जय

शुम्भनिशुम्भ विडारे, महिषासुर घाती। मैया
धूम्रविलोचन नाशिनि, निशिदिन मदमाती ॥ ॐ जय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ । मैया
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ ॐ जय

भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी । मैया
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ ॐ जय

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती । मैया
(श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रत्न ज्योति ॥ ॐ जय

(या) अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै । मैया
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ॥ ॐ जय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीसूक्त

यह सत्य है कि मनुष्य के हाथ में लक्ष्मी निवास करती है। परन्तु कभी-कभी पुरुषार्थ करते-करते भी कुछ नहीं मिलता और मनुष्य भाग्य की ओर दीनता से देखता है। दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिये भारतीय ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋगवेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में, धन प्राप्ति के लिये मंत्र हैं। धन की कामना करने वाले नर-नारियों को इनका पाठ करना चाहिये। इनके पाठ से सत्य, परिश्रम और आस्तिकता में मन टिकता है। नैतिक साधनों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

काशी के प्रसिद्ध विद्वान, वेदों के आचार्य, श्री उमेश मिश्र ने श्रीसूक्त का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। इसके साथ ही साथ लक्ष्मीपूजनविधि, लक्ष्मीसहस्त्रनामस्तोत्र, लक्ष्मी सूक्त तथा श्रीयंत्र आदि भी सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

पुस्तक बढ़िया चिकने काग़ज पर मोटे अक्षरों में छपी है। मुखपृष्ठ पर श्रीलक्ष्मीजी का नयनाभिराम चित्र भी दिया गया है जिससे पुस्तक और भी अधिक उपयोगी हो गई है। प्रचारार्थ मूल्य केवल १.५० पैसे डाक व्यय अलग।

ज्योतिष तथा पूजा-पाठ की संस्कृत-हिन्दी पुस्तकें प्राप्त करने का प्रमुख स्थान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh